हसीनाबाद : विविध परिदृश्य

(आलोचनात्मक दृष्टि)

संपादकः

कुमार सुशांत

NotNul

हसीनाबाद : विविध परिदृश्य

(आलोचनात्मक दृष्टि)

संपादक:

कुमार सुशांत

समर्पण

अपने बाबा बाबू रघुनंदन प्रसाद सिंह को

जिन्होंने मुझे तीक्ष्ण आलोचकीय दृष्टि

और जीवन को देखने का नया दृष्टिकोण प्रदान किया

पाठ-क्रम

भूमिका	कुमार सुशान्त	5
गीताश्री का जीवन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	कुमार सुशान्त	8
हसीनाबाद : साहित्य एवं कला बनाम खालिस राजनीति	मयंक	16
'हसीनाबाद' उपन्यास में स्त्री स्वातंत्र्य की खोज	जयंत साहू	24
लोककला को समर्पित उपन्यास: हसीनाबाद	कुमार सुशान्त	29
सपनों के बुनने की गाथा का आख्यान... 'हसीनाबाद'	अंकित नरवाल	39
नाच की दीवानी एक चिरैय्या की कहानी	मनीषा कुलश्रेष्ठ	43
एक ऐसे लोक की कथा, जो न कही गई, न सुनी गई	अवधेश प्रीत	47
हसीनाबाद - एक गुमनाम बस्ती की बदनाम दास्ताँ	कैलाश कुमार मिश्र	53
स्त्री विमर्श में कस्बाई लोक का तड़का	प्रभात रंजन	62
लोक से संवाद	प्रज्ञा पांडेय	63
हसीनाबाद :स्त्री के अंतः शक्ति से साक्षात्कार	पंकज सुबीर	67
स्त्री-जीवन के धुएँ और धुँध को हटाकर उम्मीदों वाले रंग का वैविध्य दिखाता कथा - समय	शहंशाह आलम	70
हसीनाबाद: सपना देखने नहीं बुनने का स्वप्न	डॉ. सत्यदेव प्रसाद	74
हसीनाबाद -कथा गोलमी की जो सपने देखती नहीं बुनती है	वंदना बाजपेयी	81
स्त्री के अंतर्मन की आवाज: भीतर भी बाहर भी- हसीनाबाद	शुभम मोंगा	87
'हसीनाबाद' उर्फ़ अ टेल ऑफ अ डांसिंग आउटकास्ट	प्रभात मिलिंद	95

स्त्री मुक्ति के संघर्ष की जलती मशाल : 'हसीनाबाद'	विनोद विश्वकर्मा	99
सामंती तिलिस्म को तोड़ता आख्यान	उर्मिला शुक्ल	102
'हसीनाबाद' की सुन्दरी का गीतापाठ !	डॉ. सुनीता	107
हसीनाबादः गांव की लड़की की सफलता की गाथा	क्षमा शर्मा	115
समकालीन राजनीति में स्त्री-जीवन : स्वप्न और संघर्ष की दास्ताँ	अरुण होता	118
हसीनाबाद : एक बदनाम बस्ती से राजनीति के बीहड़ तक का रोमांचक सफर	गायत्री आर्य	126
कुमार सुशान्त और गीताश्री की बातचीत	कुमार सुशान्त	130
गुमनाम बस्ती से हीरे की तलाश करता उपन्यास : हसीनाबाद	श्यामसुंदर पाण्डेय	140

भूमिका

हिंदी में उपन्यासों का विकास जितना गहरा और व्यापक ढंग से हुआ है, हिंदी की यह अपनी विशेषता है। प्रेमचंद पूर्व भी युग से देवकीनंदन खत्री के उपन्यास ने पाठक वर्ग को रोमांच, कल्पना, अय्यारी और तिलिस्म से रूबरू करवाकर उपन्यास की ओर आकर्षित किया। उल्लेखनीय यह है कि खत्री जी के उपन्यासों को पढ़ने के लिए पाठक का एक बड़ा हुजूम देवनागरी लिपि को सीखा था। यहाँ से हिंदी साहित्य उपन्यास के प्रति गहरी आस्था जुड़ती हुई दिखाई पड़ती है। इसके बाद प्रेमचंद उपस्थित होकर उपन्यास विधा को एक नया आयाम प्रदान करते हैं। फिर तो उपन्यासों के सिलसिले का नया दौर शुरू हो जाता है। प्रेमचंद के बाद ऐतिहासिक उपन्यासों की एक कड़ी सी बनती जाती है। इस कड़ी में निःसंदेह वृंदावनलाल वर्मा, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, भगवतीचरण वर्मा, रांगेय राघव, हजारीप्रसाद द्विवेदी, अमृतलाल नागर इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

इनके उपन्यास ऐतिहासिक होते हुए भी तत्कालीन समाज एवं राजनीति को गहरे प्रभावित करते हैं। दरअसल ऐतिहासिक उपन्यास पूर्णतः कभी ऐतिहासिक नहीं होते हैं। इतिहास के दरवाजे से प्रवेश करते हुए वे आज के सामाजिक-राजनीतिक, सांस्कृतिक व आर्थिक मूल्यों को प्रभावित करते हुए जीवन-दृष्टि को प्रभावित करते हैं। ऐतिहासिक उपन्यासों के समन्वय तत्वों में कल्पना का योग भी निश्चित रूप से सम्मिलित होता है। कारण यह कि इतिहास में कल्पना के संयोग से उपन्यास के कलेवर एवं उसकी प्रासंगिकता को नयी जमीन मिलती है।

उपन्यास लेखन में स्त्रियों की भूमिका भी सराहनीय और सार्थक रही है। ऐतिहासिक उपन्यास लेखन में हालांकि इनकी संख्या कम है किन्तु जितनी भी है वह सशक्त और जानदार है। कृष्णा सोबती, उषाकिरण खान एवं गीताश्री ने इतिहास, मिथक एवं कल्पना से ऐतिहासिक उपन्यास के उर्वर ज़मीन की बड़ी मेहनत से सिंचाई की है। हसीनाबाद उसी सिंचाई से फलित एक महत्वपूर्ण उपन्यास है।

आज तो उत्तर आधुनिक सोच के तहत कला, साहित्य, चेतना, विवेक आदि के अंत के साथ इतिहास के अंत की गूँज है। किंतु इस समय में भी हसीनाबाद लिखकर गीताश्री ने यह साबित किया है कि साहित्य और इतिहास का न कभी अंत हो सकता है और न ही इसके महत्व का ह्रास होगा। हसीनाबाद एक ऐसा उपन्यास है

जो बाह्य बुनावट में तो इतिहास की आंबपाली को केंद्र में रखती है किन्तु वह आंबपाली आज की गोलमी है। आज की गोलमी से आशय यह है कि उसकी समस्या, उसके सिद्धांत, उसकी दृष्टि और उसकी चुनौतियाँ आंबपाली से बड़ी एवं जटिल हैं। प्रतीक के तौर पर ठाकुर की बस्ती, राजाओं का महल, उस बस्ती में रहने वाले महिलाएँ, राजाओं की दासियाँ और गोलमी आंबपाली जरूर है किन्तु इस कथा की अंतः प्रवृत्ति पूर्णतः आधुनिक और आज का सच है। लेखिका ने इस उपन्यास को राजनीतिक उपन्यास की संज्ञा दी है। उपन्यास को ऐतिहासिक कहा जाय या राजनैतिक यह एक समस्या इस उपन्यास को पढ़ते हुए जरूर खड़ी होती है। लेकिन मेरे ख्याल से ऐतिहासिक राजनीतिक पहलू में ना जाकर हमें इसकी समग्रता पर विचार करना चाहिए। एक लड़की जो बदनाम बस्ती में पैदा होती है किन-किन दुर्गम परिस्थितियों, पशोपेश और चुनौतियों का सामना करते हुए अपने सपने को सिद्ध करती है, यह कथा उसकी जीवंत कहानी कहती है। एक वाक्य में कहूँ तो एक स्त्री के अदम्य जिजीविषा का शाश्वत आख्यान है यह उपन्यास।

कथा के इर्द-गिर्द कई पात्र और भी हैं जिनकी संरचना स्वाभाविक सी प्रतीत होती है। किन्तु गोलमी के बाद अगर दूसरा कोई जानदार पात्र है तो वह सुंदरी है - गोलमी की माँ। सच कहूँ तो गोलमी से अधिक दम-खम इस पात्र में दीखता है। पूरी कहानी में वह एकमात्र ऐसी किरदार है जिसकी आभा-पुंज शुरू से लेकर आखिर तक प्रभावित करता है। सच मानो तो उपन्यास की नायिका तो गोलमी है किन्तु साहस, आत्मबल, संयम, जुनून और विवेक के साथ सुंदरी पूरी स्त्री-जाति के स्वरूप को अपने चरित्र से प्रकाशित करती है।

उपन्यास को पढ़कर ऐसा लगता है कि लेखिका ने इस संसार को आंखों-देखी कलमबद्ध किया हो। गाँव-देहात और कस्बाई इलाके की रग-रग से वाकिफ़ प्रतीत होती है - लेखिका गीताश्री। वहाँ की भाषा, सामाजिक व संस्कृति, माहौल, मनोदशा इन सब तत्वों को मनोवैज्ञानिक तराजू पर तौलकर रखा गया है।

जॉर्ज लुचाक एकदम ठीक कहते हैं," उपन्यास लिखने के लिए जन-जीवन की अंतरंग और महत्वपूर्ण जानकारी जरूरी है, तभी उपन्यास में व्यक्ति और परिवेश के आत्मीय संबंध का चित्रण संभव होता है।"